**भगत सधना - सबद १**

**त्रिप कंनिआ के कारनै इकु भइआ भेखधारी ॥**

**रागु बिलावलु, भगत सधना, गुरु ग्रंथ साहिब, ८५८**

त्रिप कंनिआ के कारनै इकु भइआ भेखधारी ॥
कामारथी सुआरथी वा की पैज सवारी ॥१॥
तव गुन कहा जगत गुरा जउ करमु न नासै ॥
सिंघ सरन कत जाईऐ जउ ज्मबुकु ग्रासै ॥१॥ रहाउ ॥
एक बूंद जल कारने चात्रिकु दुखु पावै ॥
प्रान गए सागरु मिलै फुनि कामि न आवै ॥२॥
प्रान जु थाके थिरु नही कैसे बिरमावउ ॥
बूडि मूए नउका मिलै कहु काहि चढावउ ॥३॥
मै नाही कछु हउ नही किछु आहि न मोरा ॥
अउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा ॥४॥१॥

**सार:** भौतिक संपत्ति और बौद्धिक ज्ञान की इच्छा तब हमारी प्राथमिकता बन सकती है जब हमें यह लगने लगता है कि हमारी खुशी और अस्तित्व के लिए इन्हें हासिल करना ज़रूरी है। हमारा आत्म-सम्मान, हमारी भौतिक चीज़ों और ज्ञान से गहराई से जुड़ सकता है जिससे हमारे निर्णय प्रभावित होते हैं और हमारा अहंकार बढ़ जाता है। हालाँकि, अहंकार के नियंत्रण को पहचानकर और उसपर क़ाबू पाकर, हम धन का उपयोग परोपकार से और ज्ञान का प्रयोग विवेकपूर्ण ढंग से कर सकते हैं, जिससे अंततः हमें ज़्यादा सार्थक जीवन मिलता है। सच्ची प्रामाणिकता हमारे बाहरी रूप से नहीं बल्कि हमारे आंतरिक इरादों से आती है, भावनात्मक उदासीनता, दोहरेपन और आक्रामकता की स्थिति में, हमारे विभिन्न अनैतिक व्यवहारों में शामिल होने की संभावना ज़्यादा हो जाती है।

त्रिप कंनिआ के कारनै इकु भइआ भेखधारी ॥
राजा की बेटी को छलने के लिए, एक व्यक्ति ने अपना असली रूप छिपा लिया। यह पौराणिक कथा दर्शाती है कि कैसे स्वार्थी इच्छाएँ, शुद्ध इरादों का मुखौटा पहन सकती हैं।

कामारथी सुआरथी वा की पैज सवारी ॥१॥
बेलगाम इच्छाओं और स्वार्थी उद्देश्यों से प्रेरित होने के बावजूद, सर्वव्यापी चेतना सम्मानजनक सुधार की ओर मार्गदर्शन करती है। यह दर्शाता है कि यद्यपि भ्रम मन को भटका सकते हैं, जब अंतरात्मा वास्तव में चिंतन करती है तब वह जागरूकता प्राप्त कर सकती है। (१)

तव गुन कहा जगत गुरा जउ करमु न नासै ॥
हे जगत के सर्वव्यापी मार्गदर्शक, यदि आप उन इरादों को मिटाने का मार्ग नहीं दिखाते जो नकारात्मक कार्यों की ओर ले जाते हैं, आपका क्या महत्व है। यदि स्वयं के विकास के लिए सचेत प्रयास और कर्म न किए जाएँ, यह अस्तित्व के उद्देश्य पर ही प्रश्नचिह्न लगाता है।

सिंघ सरन कत जाईऐ जउ ज्मबुकु ग्रासै ॥१॥ रहाउ ॥
शक्तिशाली शेर की शरण में जाने का क्या लाभ, यदि अंततः एक तुच्छ सियार का ही शिकार बनना पड़े। यह उपमा दर्शाती है कि भौतिक या बौद्धिक उपलब्धियों के माध्यम से सुख की तलाश करना व्यर्थ है, यदि इसका परिणाम अहंकार द्वारा भस्म हो जाना हो। (१)(विराम)

एक बूंद जल कारने चात्रिकु दुखु पावै ॥
वर्षा की एक बूंद के लिए, चातक पक्षी कष्ट सहता है। यह उस कहावत की ओर संकेत करता है कि ज्ञान की तीव्र अभिलाषा के बिना कोई भी आध्यात्मिक लाभ संभव नहीं है।

प्रान गए सागरु मिलै फुनि कामि न आवै ॥२॥
जब जीवन की साँस ही चली जाए तब पूरा सागर मिल जाने पर भी उसका कोई लाभ नहीं। यह उदाहरण सांसारिक इच्छाओं के पीछे भागने की निरर्थकता को दर्शाता है क्योंकि अंततः जो कुछ भी भौतिक रूप से प्राप्त किया जाता है, वह यहीं पीछे छूट जाना है। (२)

प्रान जु थाके थिरु नही कैसे बिरमावउ ॥
जब साँस थक जाती है और अस्थिर हो जाती है तो कोई अपना मानसिक संतुलन कैसे बनाए रख सकता है। यह प्रकाश डालता है कि जीवन में संतुलन और संपूर्ण कल्याण प्राप्त करने में मानसिक स्थिरता, महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बूडि मूए नउका मिलै कहु काहि चढावउ ॥३॥
यदि कोई डूबकर मर चुका हो और तब कोई नाव आए तब भला, उसे कैसे बचाया जा सकता है। यह विलंब इस बात के महत्व को रेखांकित करता है कि नेक कर्मों को करने के लिए, समय पर मिले अवसरों को तुरंत ले लेना चाहिए। (३)

मै नाही कछु हउ नही किछु आहि न मोरा ॥
मैं कुछ भी नहीं हूँ, मेरे पास कुछ भी नहीं है और कुछ भी मेरा नहीं है। यह परम बोध प्रकट करता है कि हम सभी ब्रह्मांडीय तत्वों से बने हैं और अंततः उन्हीं में विलीन हो जाएँगे।

अउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा ॥४॥१॥
इस शून्यता को समझने के अवसर पर, साधना कहते हैं कि वह सर्वव्यापक चेतना के विनम्र भक्त के रूप में अपनी मर्यादा और विनम्रता को बनाए रखने के लिए समर्पित हैं। (४)(१)

**तत्त्व:** भक्त साधना भौतिक संपत्तियों की क्षणभंगुर प्रकृति और उस मानवीय प्रवृत्ति पर विचार करते हैं जिसके तहत मनुष्य उन चीज़ों पर स्थायी अधिकार जताना चाहता है जो मूल रूप से अस्थायी हैं। वह इस बात पर ज़ोर देते हैं कि शून्यता उस भ्रम को मिटा देती है जिसके चलते हम किसी भी चीज़

से यह अपेक्षा रखते हैं कि वह हमेशा के लिए 'मेरी' बनी रहेगी या हम उस पर अपना अधिकार जमाते हैं। किसी चीज़ से मोह रखने के बजाय, वह बड़े ही कोमल भाव से हमारा ध्यान उस सर्वव्यापी परम-सत्य की ओर मोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं जो संपूर्ण अस्तित्व में अत्यंत शांत भाव से व्याप्त है।

---

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

**Oneness In Diversity Research Foundation**

**वेबसाइट:** OnenessInDiversity.com

**ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com**